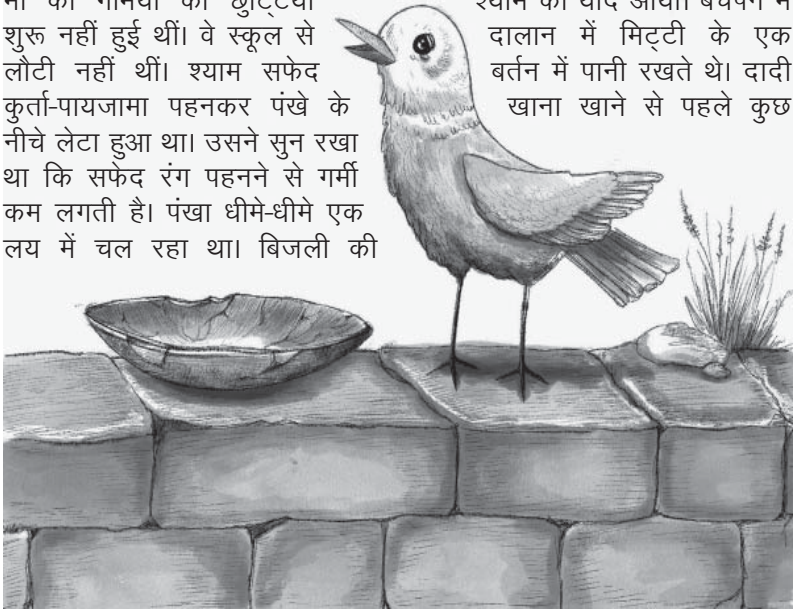


पतंग

अमित दत्ता

बहुत समय पहले की बात है। जम्मू शहर के पास एक छोटे-से करखे में गर्मियों की दोपहर थी। जून का महीना था। बाहर लू चल रही थी। माँ की गर्मियों की छुट्टियाँ शुरू नहीं हुई थीं। वे स्कूल से लौटी नहीं थीं। श्याम सफेद कुर्ता-पायजामा पहनकर पंखे के नीचे लेटा हुआ था। उसने सुन रखा था कि सफेद रंग पहनने से गर्मी कम लगती है। पंखा धीमे-धीमे एक लय में चल रहा था। बिजली की

पार कर ड्योढ़ी के पास पहुँचा। छत पर बैठी कोयल का प्यास से बुरा हाल था। पानी की तलाश में वह दालान के चक्कर काट रही थी। श्याम को याद आया। बचपन में दालान में मिट्टी के एक बर्तन में पानी रखते थे। दादी खाना खाने से पहले कुछ



ताकत जैसे चुक गई हो। हवा नीचे पहुँचने से पहले हवा हो जा रही थी। जो आराम था वो बस पंखे की आवाज़ से ही मिल रहा था। नीचे ठण्डा फर्श, ऊपर धीरे-धीरे घूमता पंखा।

तभी दरवाज़े पर दस्तक हुई। शायद माँ आई हैं! श्याम उठा। दालान

कौर पक्षियों के लिए रख छोड़ती थीं। हम खाना रसोई में ही खाते थे। बाँस की चटाई पर बैठकर।

श्याम ने साँकल खोली। बाहर माँ मुस्कराती हुई खड़ी थीं। “आज दरवाज़ा बड़ी जल्दी खोल दिया। रोज़ तो इतनी देर लगाते हो!” श्याम

को हैरानी हुई। उसको कोयल का खयाल, बचपन की यादें पलभर में आ गईं। वरना आज भी वह दरवाज़ा देर से ही खोलता। माँ को नाहक धूप में इन्तज़ार करना पड़ता। दालान पार कर माँ अपने कमरे में जा चुकी थीं। श्याम वापस अपने कमरे में जाने के लिए मुड़ा। अभी कदम बढ़ाया ही था कि ठिठक गया। उसे दोपहरें इतनी अच्छी क्यों लगती हैं? इतनी तकलीफदेह गर्मी में कैसे उसका ध्यान-सा लग जाता है। गली की एक आवाज़ तक नहीं सुनाई दे रही थी।

कभी-कभार कोई फेरीवाला अपनी सुरीली आवाज़ में कुछ बेचने आता है। पर उसको निराश ही लौटना पड़ता है। इतनी गर्मी में कौन बाहर निकले? पिछली गर्मियों की छुट्टियों में उसने पंखे के बीचों-बीच श्रीयंत्र चिपका दिया था। श्याम ठण्डे फर्श पर लेट टकटकी बाँध उसे ताकता रहता था। उसे लगता, इस तरह उसे उस सब का पता चलता रहता है जो सामने दिखता नहीं है। कभी ऊब जाता तो कोई किताब पढ़ने लगता। जैसे आज पढ़ रहा था। इन छुट्टियों में वो इसे पूरा पढ़ लेना चाहता था। ऊपर घूमते यंत्र में कई आकार बन-बिगड़ रहे थे। नीचे उसका हाथ किताब की ओर बढ़ रहा था। तभी उसे कमरे के एक कोने में लाल चींटियाँ दिखीं। और दूसरे कोने में काली चींटियाँ दिखीं। आज उनमें तेज़ी थी। शायद कमरे का तीसरा

कोना युद्ध स्थल के रूप में तय हुआ था। काली चींटियाँ लाल चींटियों को बुरी तरह पीट रही थीं। वो तुरन्त लाल चींटियों का बचाव करने लगा। क्या यह उचित था?

उसका हाथ लगातार किताब की ओर बढ़ रहा था। फर्श की ठण्डक। पंखे की लयबद्ध चाल। किताब से रिसता ज्ञान। आनन्द! यह क्या? एक क्षण के काम को क्या मैं इतनी धीरे कर रहा हूँ कि मुझे यह सब याद कर पाने का अवकाश मिल रहा है? या फिर मैं एक क्षण के इतने टुकड़े कर पा रहा हूँ कि हर टुकड़े में मैंने कई-कई स्मृतियाँ संजो ली हैं। अगले क्षण किताब श्याम के हाथ में थी। वह इसे कब से पढ़ना चाह रहा था। पर मास्टरजी ने आज्ञा नहीं दी थी। एक दिन जब मास्टरजी ने कहा कि अब यह पुस्तक पढ़ सकते हो तो वह भागकर घर गया। गुल्लक तोड़ी और उसी शाम किताब ले आया।

* * *

तभी माँ की आवाज़ आई। लगता है, वे देर से पानी माँग रही थीं। माँ कह रही थीं कि आज स्कूल के एक भी घड़े में पानी नहीं था। श्याम पानी लेने तुरन्त रसोई में गया।

रसोई से पानी टपकने की आवाज़ लगातार आ रही थी। श्याम ने इस पर पहले कभी ध्यान नहीं दिया था। उसने अलमारी से गिलास निकालकर नल के नीचे लगा दिया। जैसे ही

टोंटी खोली, पहले हवा निकलने की और फिर टप-टप की आवाज़ आई। गर्मी लगातार बढ़ती जा रही थी। उसने फ्रिज खोला। उसमें पानी की एक भी बोतल नहीं थी। उसने पूरा घर छान मारा। पानी कहीं नहीं मिला। खाली गिलास को नल के नीचे रखकर वह अपनी साइकिल लेने बाहर चला गया। बूँदें गिरने की आवाज़ लगातार आ रही थी - टप टप टपा। वो बाहर से ही बोला, “घर में पानी नहीं है। साइकिल लेकर जा रहा हूँ। बाज़ार से या मुहल्ले से किसी से माँग लूँगा।” माँ ने “हूँ” या ऐसा ही कुछ कहा। श्याम ने जोर-से पैडल मारा और चला गया। गली पार करते ही उसे हैरानी हुई। सब तरफ सन्नाटा था।

मुहल्ले में कोई नहीं था। घरों में न साँकल थी, न ताला। सब कहाँ गए? उसने बाज़ार का रुख किया। बाज़ार भी सुनसान था। सब दुकानें खुली थीं। दूर-दूर तक कोई मनुष्य नहीं दिखता था। गर्मी बढ़ती जा रही थी। पशु-पक्षी भी प्यास से बेहाल थे।

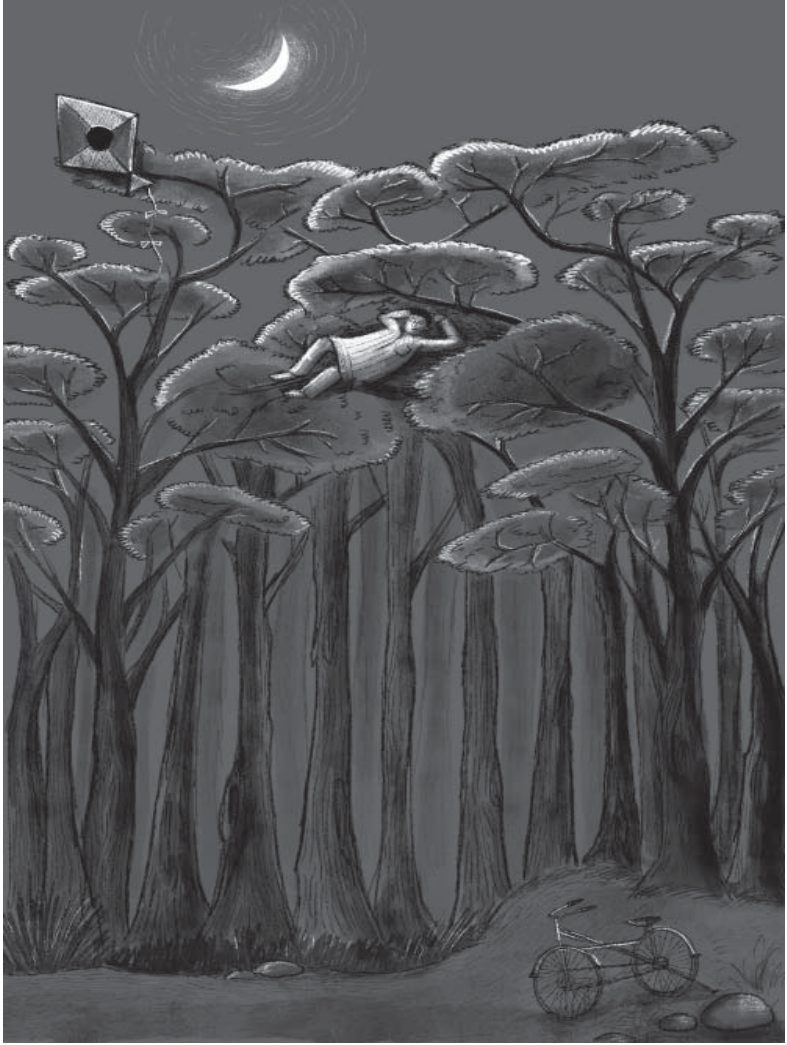
* * *

तभी श्याम ने साइकिल पर बैठे-बैठे एक विचित्र दृश्य देखा - एक मँढक धूप से घबराकर साँप के फन के नीचे बैठा है। साँप भी गर्मी के मारे उसे खा नहीं पा रहा है। तभी सूखी ज़मीन पर दरारें उभरने लगीं। धीरे-धीरे वे पूरी पृथ्वी को घेरने लगीं। घबराकर श्याम

तेज़ी-से पैडल मारने लगा। वह बिना पानी लिए घर नहीं लौटना चाहता था। माँ प्यास से तड़प रही होंगी।

क्या वो बेहोशी के-से आलम में साइकिल चलाता जा रहा था! कुछ पता नहीं। पर उसे याद हैं वे धुँधली आकृतियाँ, ठण्डी हवाएँ, अद्भुत संगीत। क्या वे गन्धर्व थे? जिनका संगीत अमरता की ओर ले जाता था? सामने आकाश में एक पतंग हिचकोले खा रही थी! इतनी सुन्दर पतंग उसने कभी किसी किताब, कैलेण्डर या फिल्म में नहीं देखी थी। पतंग जब हवा से टकराती तो एक अजब संगीत पैदा हो रहा था। पतंग गा रही थी? या बात कर रही थी?

उसे इसी जगह, इसी तरह बने रहने का मन किया। वह सब कुछ भूलकर उस पतंग का पीछा करने लगा। पतंग उसके हाथ आने को होती कि हवा उसे उड़ा ले जाती। उसे पता ही नहीं चला कि पतंग का पीछा करते कब घण्टे दिन में बदले और दिन महीनों, सालों में। रात को वह किसी जंगल में रुक जाता। सबसे बड़े पेड़ की सबसे ऊँची शाख पर घास का बिस्तर बनाता। जंगली फल-पत्ते खाकर गुज़ारा करता। सुबह उठते ही फिर पतंग का पीछा करने लगता। पतंग उसके हाथ नहीं आई। रात को पतंग भी किसी पेड़ पर आराम करती और सुबह के पहले झोंके से उड़ना शुरू कर देती।



एक दिन बड़ा तूफान आया। उड़ती धूल-मिट्टी में कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। पतंग दूर एक छोटे धुँधले बिन्दु की तरह दिख रही थी।

श्याम, तूफान की परवाह किए बगैर पतंग का पीछा किए जा रहा था। एक बार तो उसने पतंग को छू ही लिया था कि तूफान उसे दूर उड़ा ले गया।

* * *

सालों बाद तूफान थमा। पर जाती हवा के साथ वो पतंग भी चली गई। श्याम को अपना जाना-पहचाना इलाका दिखाई देने लगा। उसे याद आया कि वो तो माँ के लिए पानी लाने निकला था। वो ज़ोर-ज़ोर-से रोने लगा। अब तक वह बूढ़ा हो चुका था। उसके बाल सफेद हो गए थे। चेहरे पर झुर्रियाँ थीं। “अब माँ मुझे कैसे पहचानेगी?” तभी उसे अपने बचपन का बाज़ार दिखा। फिर मुहल्ला। फिर अपना घर। घर में घुसते ही उसका रोना छूट गया। दालान में पहुँचते ही उसे माँ की आवाज़ सुनाई दी। वह उसे उसके बचपन के नाम से पुकार रही थीं। “आधा घण्टा हो गया श्यामू। रसोई से पानी लाने में इतनी देर लगती है भला? जल्दी-से पानी दे। प्यास से मुँह सूख रहा है। और देखना, बाहर कोई बच्चा ज़ोर-ज़ोर-से रो रहा है।” श्याम ने ठिठककर अपने आँसू पोंछे। वह भागता हुआ रसोई में गया। टपकते



नल के नीचे रखा गिलास भर गया था। उसने माँ को पानी दिया। माँ आधा गिलास पीकर रुक गई। बोलीं, “अरे, यह तो बहुत मीठा और ठण्डा है। तुम भी कुछ घूँट पीकर देखो।”

अमित दत्ता: एक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याती प्राप्त फिल्म निर्माता एवं कहानीकार हैं। आप नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ डिज़ाइन, अहमदाबाद व भारतीय फिल्म एवं टेलीविज़न संस्थान में शिक्षक रहे। दुनिया के अनेकों शहरों में आपकी फिल्म का प्रदर्शन हुआ है। आपकी फिल्मों को कई राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार व सम्मान मिला। आपने *कालजयी कमबख्त* नामक एक अनूठा उपन्यास भी रचा।

सभी चित्र: अदिति दीक्षित: दिल्ली में स्थित लेखिका, फिल्म निर्माता, चित्रकार और स्टॉप मोशन एनिमेटर हैं। उनकी स्टॉप मोशन शॉर्ट फिल्म *डेज़ी* वर्तमान में दुनियाभर में 25 से अधिक फेस्टिवल में नामांकित हुई है और उसे 6 फेस्टिवल में सर्वश्रेष्ठ छात्र स्टॉप मोशन शॉर्ट का पुरस्कार दिया गया है। उन्होंने भारत की पहली वयस्क एनिमेटेड व्यंग्य शृंखला *आपकी पूजिता* के दो एपिसोड भी लिखे और निर्देशित किए हैं।

यह कहानी किताब *ग्यारह रुपए का फाउण्टेन पेन*, जुगनू प्रकाशन, *इकतारा* से साभार।